शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

ममता कालिया के उपन्यास 'बेघर' का सामाजिक यथार्थ

*डॉ. आद्या, **आशा साहू
*व्याख्याता, हिन्दी विभाग,
**शोधार्थी, हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

युगीन साहित्य अपने समय का जीवंत दस्तावेज होता है। साहित्य अपने लिए समाज से कच्ची सामग्री संगृहीत करता है और उसे अनुसृजन के माध्यम से पुन: समाज को लौटाता है। इस चित्रण और अंकन में वह वास्तविकता में कल्पना के रंग भरकर अभिव्यक्ति को आकार देता है। वास्तव में समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं बल्कि संबंधों का जाल है। साहित्यकार इस जाल की बनावट को निकट से परखता है। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास में इसके लिए अधिक अवकाश होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में ममता कालिया के उपन्यास में सामाजिक यथार्थ पर दृष्टिपात किया गया है।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना वह जीवित नहीं रह सकता। प्राचीन काल से ही मनुष्य अपने विकास के लिए प्रयत्नशील रहा है और इस कारण उसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है क्योंकि एक दूसरे के सहयोग से ही मानव-जीवन सम्भव है। इस प्रकार समाज केवल व्यक्तियों का समूह ही नहीं, सामाजिक सम्बन्धों तथा समस्याओं का गहन जाल है। प्रत्येक समाज की अपनी मान्यताएं, रीति-रिवाज एवं परम्पराएं होती हैं। ये परम्पराएं ही समाज में रहने वाले भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को एक सूत्र में बांधती है। "किसी एक ही उद्देश्य हो लेकर किसी निश्चित दिशा में जाने वाले मानव समूह को 'समाज' कहा जाता है।"1

साधारण बोल-चाल में समाज शब्द का प्रयोग मनुष्य के समूह से माना जाता है। मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए सामाजिक सम्बन्धों की आवश्यकता पड़ती है। पारस्परिक मेल-मिलाप पर आधारित इन्हीं सम्बन्धों को ही समाज का नाम दिया जाता है। सामाजिक यथार्थ से तात्पर्य, समाज की वास्तविक अवस्था का चित्रण है। सामाजिक यथार्थ समाज में घटित होने वाली सच्ची घटनाओं का यथार्थ चित्रण है। सामाजिक यथार्थ को साहित्य में अभिव्यक्त करते समय रचनाकार समाज में व्याप्त कुरीतियों का चित्रण करता है। जिसके अन्तर्गत समाज में व्याप्त वर्ग, व्यवस्था, नैतिक पतन, नारी की दिशा, चोरी, व्यभिचार, स्वच्छन्द प्रेम प्रवृत्ति आदि का चित्रण साहित्यकार करता है। समाज में घटित होने वाली घटनाओं का लेखा-जोखा उसके तत्कालीन साहित्य के द्वारा ही पता चलता है।

उपन्यास सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति देने का सशक्त माध्यम है। उपन्यास और सामाजिक यथार्थ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। उपन्यास कथावस्तु के रूप में सामाजिक यथार्थ का चुनाव

कर अपनी प्रामाणिकता व प्रभावकता बढ़ाता है तो सामाजिक यथार्थ की प्रभावी अभिव्यक्ति उपन्यास के माध्यम से होती है।

ममता कालिया के लेखन में परम्परा और आधुनिकता

ममता कालिया का लेखन परम्परा और आधुनिकता के द्वन्द्व को प्रस्तुत करता है। सामयिक भारतीय जन जीवन जिस रूप में द्विधाग्रस्त होकर परस्पर विरोधी असंगत विडम्बना पूर्ण दोहरा आचरण करता नजर आता है। उसके यथार्थ को इन्होंने सूक्ष्मता से पकड़ कर अंकित किया है। सांस्कृति अवधारणायें आज भी युवा मानस को जकड़े हुए हैं। उसे परम्परा मुक्त नहीं होने देती जबकि युग की आवश्यकताएं उसे बरबस आगे खींचने की चेष्टा करती रहती है। इस कारण आज का युवा रूचि से आधुनिक होकर भी संस्कारों से जड़ और परम्परावादी है।

ममता कालिया का लेखन विशेष रूप से भारतीय नारी के परिवेश के इर्द-गिर्द घूमता है। इनका उपन्यास 'बेघर' पारिवारिक जीवन की निराशाओं, कुण्ठाओं अन्तर्विरोधों और असंगतियों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है। 'बेघर' उपन्यास हमारे समाज में व्याप्त मध्यकालीन संकीर्णता और दकियानूसी विचारों के परिणामों को व्यंजित करता है।

ममता कालिया द्वारा रचित 'बेघर' उपन्यास पति-पत्नी के आपसी विश्वास एवं शारीरिक सम्बन्धों को बयान करता है। उपन्यास का नायक परमजीत और संजीवनी दोनों ही सुशिक्षित है। काम की तलाश में आये परमजीत की मुलाकात बैंक में काम करने वाली संजीवनी के साथ होती है। वह मित्रता जल्द ही प्यार में बदल जाती है। दोनों ने विवाह से पूर्व ही शारीरिक सम्बन्ध बना लिये थे। घर वाले संजीवनी की शादी नहीं करना चाहते। क्योंकि उसकी कमाई से ही घर चलता है। संजीवनी का कौमार्य पहले ही भंग हो जाने के शक से परमजीत संजीवनी के सहवास में उदासीन रहता है और उसका मन विद्रोह करने लगा कि संजीवनी के जीवन में वह पहला पुरूष नहीं है। "परमजीत को तकलीफ हुई, बेतरह तकलीफ, यह जानकर कि वह पहला नहीं था। बदहवासी मिटते ही यह बात उसे पत्थर की तरह लगी। लड़कियों के कुंवारेपन की पहचान उसने चीख पुकार और खून से सम्बद्ध की थी। आरम्भिक विरोध के बाद संजीवनी उसे प्रस्तुत मिली और बाधाहीन। इस समय अपने बदन में यह अहसास लिये वह संवीवनी को घूरता बैठा था। उसे गुस्सा नहीं आ रहा था, खीझ भी नहीं पर वह हार गया था। वह संजीवनी को अपनी दुनिया में पूरी तरह समा चुका था, उसने कतई नहीं सोचा था कि संजीवनी की उससे अलग एक व्यक्तिगत दुनिया रही होगी। जिसका भागीदारी कोई ओर रहा होगा। उसकी दुनिया इतनी बड़ी रही है, यह विश्वास उसे नहीं हो रहा था। वह जो सोचता था कि संजीवनी को छूना भी जिम्मेदारी को भारी बनाना है, इस समय अपने को एकदम ताकतहीन पा रहा था। पहला न होने की निराशा के सन्नाटे के साथ-साथ उसे अपनी जिन्दगी का सारा नक्शा मुचड़ा हुआ दिखाई दे रहा था।"2

आत्म समर्पण की सजा हमेशा स्त्री को ही भुगतनी पड़ती है। 'बेघर' में भी संजीवनी के साथ ऐसा ही हुआ। परमजीत उससे सम्बन्ध स्थापित करने के बाद उसे छोड़ देता है। संजीवनी को अपने ही घर में अपनी ही भाभी से विद्रोह एवं

विरोध को झेलना पड़ता है। स्त्री द्वारा स्त्री का विरोध करना इससे बड़ी विडम्बना एक स्त्री जीवन और स्त्री के लिए क्या होगी। संजीवनी के परिवार में माता-पिता, भाई-बहन और भाभी का एक संयुक्त परिवार है। बूढे हो चुके पिता कारोबार का बोझ बड़े बेटे को दे देते हैं। इससे उसकी पत्नी घर में अपने आप को श्रेष्ठ समझने लगती है और घर के अन्य सदस्यों को तुच्छ समझती है। भाभी के इस व्यवहार से संजीवनी बहुत पेरशान रहती थी। "नौकरी करती हूँ, इसी से तो भाभी कुछ बोल नहीं सकती। जब से भाई ने बिजनेस में हाथ लगाया है भाभी का दिमाग आसमान पर चढ़ गया है, सोचती है सारा घर उनका है। पैसे-वैसे की बातें सुनना मुझे पसन्द नहीं। पिछले साल तक तो मैं घर पर थी। पर भाभी माँ की दवाइयों का बिल देखकर मुंह बनाती थी तो मुझे बर्दाश्त नहीं हुआ।"3

दाम्पत्य सम्बन्धों की विषमता समकालीन जीवन का एक कटु सत्य है। इस कटु सत्य का यथार्थ चित्रण ममता कालिया ने अपने उपन्यास साहित्य में प्रस्तुत किया है। स्त्री और पुरूष के माता-पिता के कारण पति-पत्नी के बीच विभेद पैदा हो जाते हैं। "रमा को सास के लाये उपहारों में खास खुशी नहीं हुई। उसकी निगाह में ये बस लेने के बहाने थे। फिर उसे यह भी पसन्द नही था कि सास सारा दिन रसोई में झांक –झांक कर देखे उसने क्या पकाया और खाया।"4

पति-पत्नी के शारीरिक संबंधों को केन्द्र में रखकर यह उपन्यास लिखा गया है। कुंवारेपन की कसौटी को लेकर हमारे समाज में आज भी जो रूढ धारणाएं हैं उन पर इस उपन्यास में तीखा व्यंग्य है। हांलाकि संजीवनी जिस-तिस की शय्या संगिनी बनने वाली लड़की नहीं थी। एक असफल बलात्कार का शिकार हुई थी। लेकिन परमजीत उससे विमुक्त होकर एक अनजानी रमा से विवाह कर लेता है। कौमार्य की कसौटी पर खरी उतरने वाली रमा पति परमजीत की अनगिनत कोमल संवेदनाओं को चूर-चूर कर देती है। परमजीत की कोमल कलात्मक प्रकृति की संजीवनी के साथ जीवन-यापन करने की मधुर कल्पनाएँ फूहड़ और भेदस रूचि की रमा के साथ विवाह करने पर एक-एक कर टूटती जाती है। रमा के खराब आचरण के कारण परमजीत को हृदयाघात हो जाता है।

'बेघर' में 'कौमार्य के मिथक' की पुरूष समाज में व्याप्त रूढ़ धारणा है। उस पर चोट की गई है। इसमें मध्यवर्गीय समाज के मानसिक संस्कारों में शिक्षित दीक्षित पुरूषों की परम्परागत सोच समझ को स्पष्ट किया गया है। यही लोग स्त्रियों के प्रति भोगवादी, सामंती और अमानवीय व्यवहार रखते हैं।

निष्कर्ष

ममता कालिया ने सामाजिक यथार्थ की परम्परा का अपने उपन्यास साहित्य में पूरी तरह से निर्वाह किया है तथा समाज के ऐसे पहलू जिनको समाज में रहकर भी अनदेखा किया जाता है उन विषयों पर अपना लेखन केन्द्रित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 डा. राजेश रानी, हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृ.सं. 1

2 ममता कालिया, बेघर, पृ.सं. 93

3 ममता कालिया, बेघर, पृ.सं. 66

4 वही, पृ.सं. 104